**प्रश्न १: त्रिविध तापांची नवे सांगून त्यांच्या व्याख्या सांगणाऱ्या ओव्या लिहा**

दु:खाचे वर्गीकरण – अध्यात्मिक/अधिभौतिक/आधिदैविक हे सांख्यांनी प्रथम केले. बाह्य कारणांनी (due to external influence) होणाऱ्या दु:खांना अधिभौतिक, अंतर कारणांनी (due to internal/personal factor) होणाऱ्या दु:खांना अध्यात्मिक तर नशीब/दैव (fate) यांनी होणाऱ्या दु:खांना आधिदैविक म्हणतात.

* देह इंद्रिय आणि प्राण| याचोनि योगे आपण| सुखदु:ख सिणे जाण| याचे नाव **अध्यात्मिक**|| (३-६-१३)
* सर्व भूतांचेनि संयोगे| सुखदु:ख उपजो लागे| ताप होता मन भंगे| या नव **अधिभूतिक** || (३-७-२)
* शुभाशुभ कर्माने जना| देहांती यमयातना| स्वर्ग नरक भोग नाना| या नाव **आदिदैविक**|| (३-८-२)

**प्रश्न २: तक्ता पूर्ण करा**

|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| **अनुक्रमांक** | **विधान** | **तापाचा प्रकार** | **ओवी क्रमांक** |
| **१** | **आजोबांचा चष्मा हरवला** | **अध्यात्मिक** | **३-६-४९/४५** |
| **२** | **उसाच्या मळ्याला दावेदाराने आग लावली** | **अधिभौतिक** | **३-७-८४** |
| **३** | **यात्रीकरुचे धन ठगाने लुबाडले** | **अधिभौतिक** | **३-७-४९** |
| **४** | **ऐन उमेदीमध्ये माधवराव क्षयाने आजारी पडले** | **अध्यात्मिक** | **३-६-३४** |
| **५** | **स्वा सावरकर यांना तुरुंगायाताना सोसाव्या लागल्या** | **अधिभौतिक** | **३-७-६३** |
| **६** | **वर्धाक्यामध्ये प्रत्येकाला हा ताप होतो** | **अध्यात्मिक** | **३-६-५३** |
| **७** | **जन्मत: आंधळेपण नशिबी येणे** | **आधिदैविक** | **३-८-१६/१७** |

**प्रश्न ३: समर्थांच्या काळातील राजकीय छळ, अपघात आणि सासुरवास निदर्शक एकेक ओवी लिहा**

* **राजकीय छळ:** प्राणी राजदंड पावत| जेरबंद चाबूक वेत| दरेमार तळवेमार होत| या नाव आदिभूतिक|| (३-७-६३)
* **अपघात:** ऐसा अग्न लागला| अथवा कोणी लाविला| हानी झाली का पोळला| या नाव आदिभूतिक|| (३-७-४३)
* **सासृरवास:** सासुरवास गालोरे|ठुणके लासरे चिमोरे| आले रुदन ण धरे| आ नाव आदिभूतिक||(३-७-२५)

**प्रश्न ४: संदर्भासहित अर्थ स्पष्ट करा:” ऐसी मर्यादा लाविली देवे| म्हणोनी नीतीने वर्तावे||”**

आपल्या बऱ्या वाईट कर्माप्रमाणे मृत्युनंतर भोग भोगावे लागतात. एखाद्याने नीती सोडली तर राजा शिक्षा करतो. त्याने नीती सोडली तर यम शिक्षा करतो. यमाने नीती सोडली तर देव त्याला शिक्षा करतात. हा धाक असल्याने सर्वांनी नीती नुसारच वागावे. जसे पेरले तसे उगवते. त्यामुळे सतत चांगली कर्मे केली तर जिवंत असताना व नंतर सुद्धा यातना-शिक्षा भोगाव्या लागत नाहीत.

**प्रश्न ५: गेल्या दहा वर्षात आपणास उद्वेग आणणाऱ्या एखाद्या तापाचा अनुभव:**

माझ्या अंगठ्याच्या नाखाखाली आत गाठ झाली होती. स्पर्श तर सोडाच साधी गार हवा लागली तरी ठणकायाचे. त्यावर पहिल्या शत्राक्रियेत पूर्ण नाख काढून ते काढण्याचा प्रयत्न झाला. तो यशस्वी झाला नाही. पुन्हा एक शस्त्रक्रिया. ठणका तसाच. पुन्हा एक शस्त्रक्रिया. अश्या ४ शस्त्रक्रिया केल्यावर ती गाठ गेली. प्रत्येक शस्त्रक्रियेनंतर antibioticsमुळे अनेक दिवस तोंड यायचे. खाता यायचे नाही. काढलेल्या नाखाजागी रोज पट्टी लावणे. उघडे पडल्याने ठणका असे अनेक दिवस अध्यात्मिक दु:ख काही वर्ष भोगत होतो. आता आराम आहे.